पुकार

सतीश आचार्य

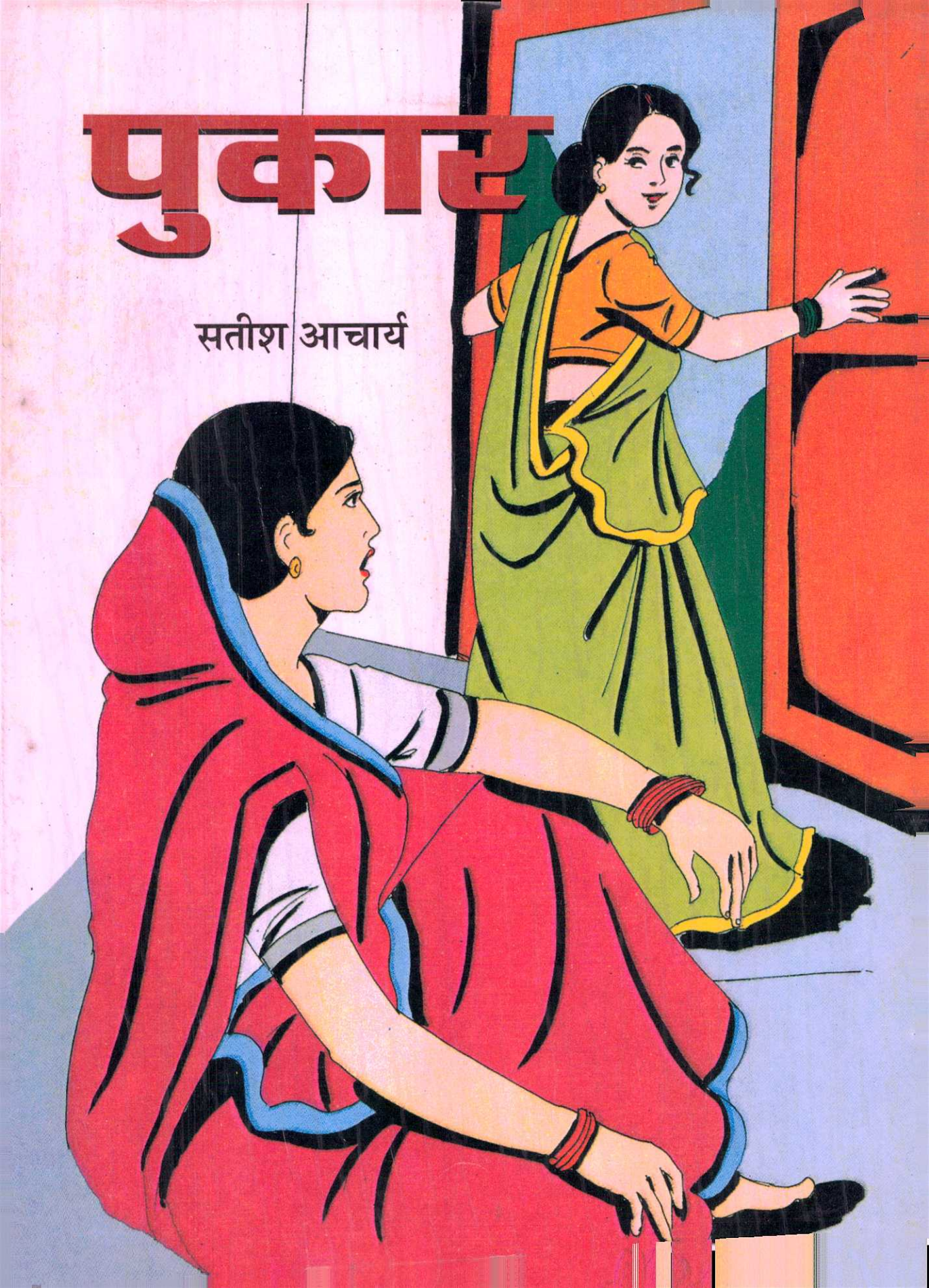

एकांकी

पुकार

सतीश आचार्य

(Estd : 1939)
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001:2000 प्रकाशक

प्रकाशक • प्रभात प्रकाशन™
4/19 आसफ अली रोड
नई दिल्ली-110002
तत्त्वावधान • भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
सर्वाधिकार • सुरक्षित
संस्करण • प्रथम, 2008
मूल्य • पच्चीस रुपए
मुद्रक • नरुला प्रिंटर्स, दिल्ली

PUKAR *by* Satish Acharya Rs. 25.00
Published by Prabhat Prakashan, 4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2 (INDIA)
ISBN 978-81-7315-618-2

पुकार

पात्र

विमला	:	*एक महिला*
गंगा	:	*दाई*
डॉक्टर	:	*महिला डॉक्टर*
अनिता	:	*विमला की बहू*
दिनेश	:	*अनिता का पति, विमला का बेटा*
आवाज	:	*अनिता की कोख में पल रही बच्ची*

[विमला आँगन में बैठी है। आज विमला बहुत खुश है। उसकी बहू अनिता के पाँव भारी हैं। मन-ही-मन सोचने लगी। मेरे घर पोता जनमेगा। सारे गाँव को मिठाई बाँटूँगी। इतने में उसे गंगा दाई दिखती है, उसे बुलाती है।]

विमला : गंगा, ऐ गंगा! सुन तो जरा।

गंगा : क्या बात है विमला भाभी? बोलो।

विमला : बात क्या? तुम तो हमारे घर का रास्ता ही भूल गईं।

गंगा : मैं ठहरी दाई। अब भला तुम्हें मुझसे क्या काम?

विमला : काम क्यों नहीं? मेरी बहू को भूल गई क्या?

गंगा : (कान पकड़कर) माफ करना भाभी। बहू को तो मैं भूल ही गई थी।

विमला : तो कब आ रही है बहू को देखने?

गंगा : क्यों देखने जैसा है क्या?

विमला : अरे, शादी हुए पाँच साल हो गए, तू क्या चाहती है?

गंगा : भाभी, मेरा मतलब ये नहीं था।

विमला : मतलब-वतलब को छोड़। बता, मेरी बहू को देखेगी कि नहीं?

गंगा : कैसी बात करती हो भाभी? तुम्हारे बेटे का जनम भी तो मैंने करवाया था। उसके बच्चों का जनम भी मैं करवाऊँगी। परंतु...

विमला : परंतु क्या...तू नहीं देखेगी?

गंगा : ऐसी बात नहीं है। मैं उसे जरूर देखती मगर...

विमला : अगर-मगर मत कर। साफ-साफ बता, क्या बात है?

गंगा : भाभी, मैं चाहती थी कि बहू की जाँच डॉक्टर बाईजी से

करवानी चाहिए।

विमला : अरे गंगा, आज तू पागलों जैसी बातें कर रही है। कितने बरसों से तू गाँव में जापे करवा रही है?

गंगा : वह सब तो ठीक है, पर अब समय बदल गया है।

विमला : देख गंगा, हमारे लिए तो कुछ नहीं बदला। तू तो झटपट एक छोटा सा, प्यारा सा, फूल सा पोता दे, बस। मैं कुछ नहीं जानती।

गंगा : भाभी, यह तो सब भगवान् की माया है। पोता-पोती हमारे हाथ में थोड़े ही हैं।

विमला : गंगा शुभ-शुभ बोल। मुझे तो मेरे कुल का दीपक चाहिए। उसके बिना मुझे मोक्ष नहीं मिलेगा।

गंगा : भाभी, कैसी नादानी भरी बातें करती हैं। अब तो लड़का क्या, और लड़की क्या? दोनों समान हैं।

विमला : शास्त्रों में लिखा है। पोता चिता को अग्नि देगा तभी बैकुंठ मिलेगा।

गंगा : भाभी, यह शास्तर-वास्तर तो मैं कोनी जाणु।

विमला : लगता है, आज तुझे कोई मिला नहीं। एक बात कान खोलकर सुन ले, पोता होगा तो तेरे भी वारे-न्यारे करवा दूँगी।

गंगा : भाभी। बहू की पहली संतान है। आँगन में किलकारी

गूँजेगी। यह क्या कम बात है?

विमला : गंगा, यह तो बहुत अच्छी बात है। पर तू सोच, यह किलकारी अगर पोते की हो। मेरे कुलदीपक की हो तो कैसा होगा?

गंगा : ठीक है भाभी, भगवान् करे ऐसा ही हो।

विमला : क्या कहा? ऐसा ही हो। अरे! ऐसा ही होगा। मैंने माता से मन्नत माँगी है।

गंगा : माताराणी सबकी इच्छा पूरी करे। अच्छा तो भाभी, अब मैं चलती हूँ।

विमला : लगता है, नाराज हो गई। चली जाना, पर क्या मेरी बहू को देखेगी नहीं?

गंगा : भाभी, अब वक्त बदल गया है। तुम भी किस जमाने की बात करती हो? मैं क्या देखूँगी बहू को। बहू को तो हम डॉक्टर बाईजी को दिखाएँगे। मैं आज ही बहू का नाम डॉक्टर बाईजी को लिखवा दूँगी।

विमला : अच्छा, ऐसी बात है! तब तो ठीक, पर बहू को दिखाना कब है?

गंगा : क्या बात है भाभी? बहुत चिंता हो रही है बहू की। मुझे तो लगता है, बहू से ज्यादा पोते की चिंता है।

विमला : तू कुछ भी समझ। यह सब जिम्मेदारी तेरी है।

गंगा : तो फिर चिंता मत करो। मैं सँभाल लूँगी। कल बहू को मैं स्वयं डॉक्टर बाईजी के पास लेकर जाऊँगी।

विमला : अरे वाह! बड़ी आई बहू को लेकर जाने वाली। मैं भी चलूँगी तेरे साथ। कल आ जाना जल्दी।

गंगा : हाँ, हाँ··· आ जाऊँगी। पहले जाने तो दो।

(गंगा चली जाती है। दूसरे दिन सुबह गंगा और विमला, अनिता को लेकर डॉक्टर बाईजी को दिखाने अस्पताल जाते हैं···)

डॉक्टर : आओ गंगा। कैसी हो? किसे लेकर आई हो?

गंगा : बाईजी, सब ठीक है। यह है मेरी भाभी विमला। हम उनकी बहू अनिता को दिखाने आए हैं।

डॉक्टर : आओ, आओ, विमला बहन! आओ अनिता, मैं तुम्हारी जाँच कर लूँ।

(डॉक्टर बाईजी अनिता की जाँच करती है। उसके नाम का जच्चा-बच्चा कार्ड बनाती है। फिर वह गंगा व विमला से कहती हैं।)

डॉक्टर : विमला बहन! आपकी बहू और उसका बच्चा, सब ठीक हैं। परंतु वह थोड़ी कमजोर है। उसकी सेहत का पूरा-पूरा ध्यान रखना। यह लो जच्चा-बच्चा कार्ड। इस पर सभी बातें लिखी हैं। इसके अनुसार बहू का ख्याल रखना।

समय-समय पर जाँच करवाने आते रहना।

विमला : ठीक है बाईजी। मैं बहू की देखभाल में जरा भी कमी नहीं रखूँगी। बस, मुझे तो मेरा कुलदीपक दे दे।

डॉक्टर : विमला बहन! तुम उसकी जरा भी चिंता मत करो। गंगा ने अनिता को यहाँ लाकर बहुत अच्छा काम किया है।

गंगा : बाईजी, यह सब तो आपकी बताई बातों का असर है। आपने ही कहा था कि गाँव में जैसे ही किसी गर्भवती का पता चले, अस्पताल में नाम लिखवा देना। सो मैंने लिखवा दिया।

डॉक्टर : चलो अच्छा किया। अब तुम जाओ। मुझे दूसरी औरतों की जाँच भी करनी है।

(गंगा जाने लगती है। विमला गंगा से डॉक्टर बाईजी से पूछने को कहती है। गंगा आनाकानी करती है। उन दोनों को बातें करते देख डॉक्टर बाईजी कहती है।)

डॉक्टर : क्या बात है गंगा? क्या पूछना है?

गंगा : बाईजी, कुछ नहीं। कुछ नहीं। बस, हम तो जा रहे हैं।

विमला : अरे गंगा, कैसे कुछ नहीं? जब डॉक्टर बाईजी कह रही हैं तो पूछती क्यों नहीं?

गंगा : विमला भाभी, चलो यहाँ से। तुम भी क्या गजब कर रही हो?

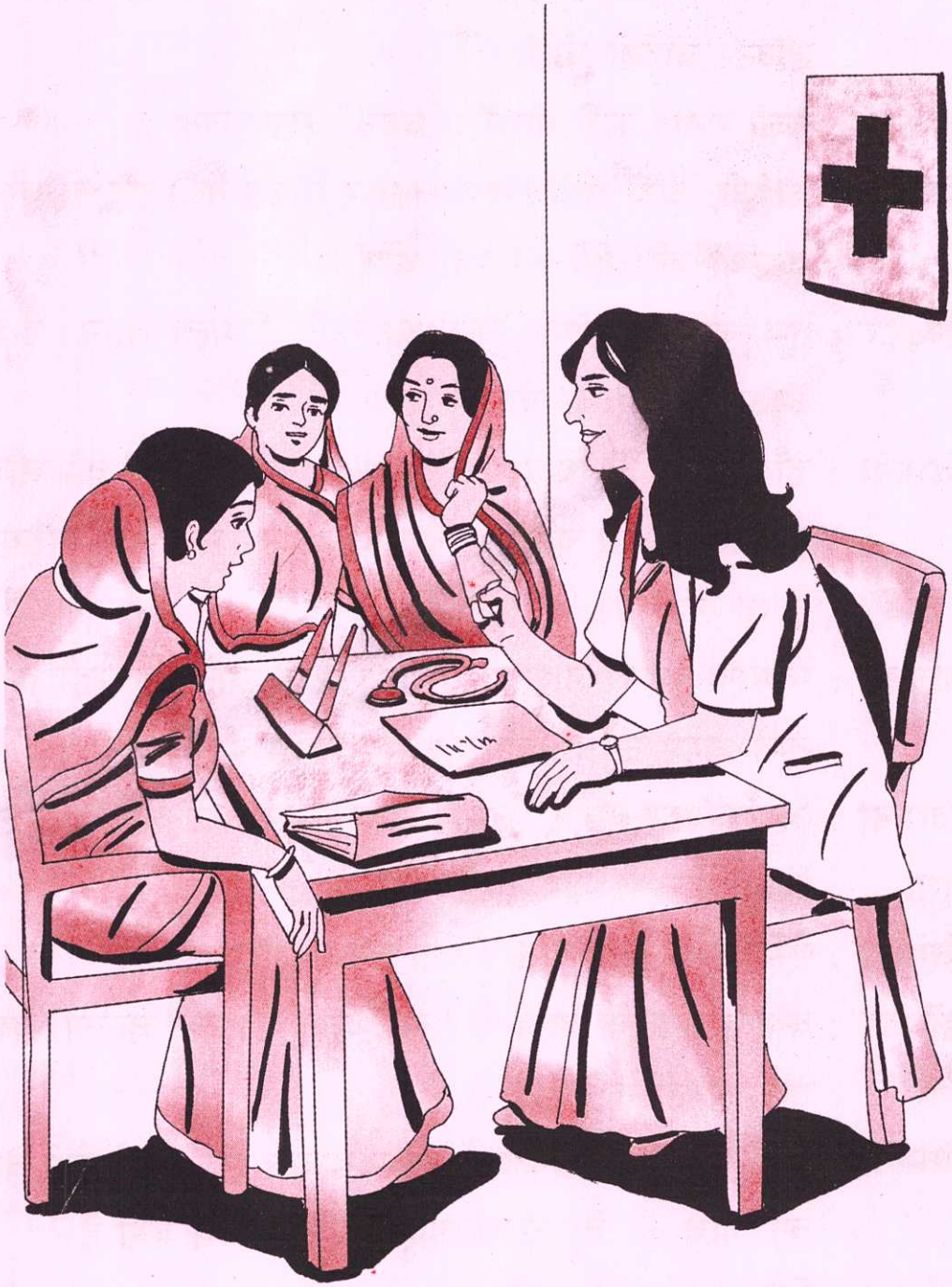

(गंगा विमला का हाथ पकड़कर ले जाने लगती है। तभी डॉक्टर बाईजी बोली।)

डॉक्टर : रुको गंगा। कहो, विमला बहन, क्या पूछना है?

गंगा : बाईजी, आप भी किसके चक्कर में आ गईं। हम तो घर-गृहस्थी की बातें कर रही थीं।

डॉक्टर : तुम चुप रहो गंगा। घबराओ नहीं, विमला बहन। इधर आओ, कहो क्या बात है?

विमला : डॉक्टर बाईजी, बात यह है कि आपने मेरी बहू की जाँच तो कर ली, पर यह नहीं बताया कि उसके गर्भ में लड़का है या लड़की।

डॉक्टर : विमला बहन! होश में तो हो। कैसी बातें कर रही हो? तुम्हें शरम नहीं आती यह सब पूछते हुए।

विमला : अरे डॉक्टर बाईजी, इसमें शरम किस बात की?

गंगा : विमला भाभी, तुम चलो यहाँ से।

विमला : ऐसे कैसे चली जाऊँ? पता करके ही जाऊँगी।

डॉक्टर : क्या पता करके जाओगी? यहाँ कुछ पता नहीं चलेगा। क्या तुम जानती नहीं?

विमला : मैं तो एक बात जानती हूँ। आप डॉक्टर हैं। आपने मेरी बहू की जाँच की है, तो बताइए उसके गर्भ में क्या है?

डॉक्टर : विमला बहन गर्भ में बच्चे के लिंग का पता करना और

करवाना दोनों कानूनन अपराध हैं। इसलिए मेहरबानी करके यहाँ से जाओ। यहाँ से तुम्हें कुछ भी पता नहीं चलेगा।

विमला : रहने दो डॉक्टर बाईजी। दुनिया में डॉक्टरों की कमी नहीं। चलो अनिता यहाँ से। (वह जाने लगती है।)

गंगा : विमला भाभी! डॉक्टर बाईजी की बातों का बुरा मत मानना। वह ठीक ही कह रही हैं।

विमला : अरे! खाक ठीक कह रही हैं? गंगा, आखिर तुमने भी अपना रंग दिखा दिया।

गंगा : भाभी, मन छोटा न करो। अरे, अपनी अनिता का बच्चा सही-सलामत है, यह क्या कम बात है। आखिर तुम लड़का या लड़की का पता करके क्या करोगी?

विमला : गंगा, तुम चुप हो जाओ। अब एक शब्द भी मत बोलना। मैं ही नादान थी जो तुम्हारा भरोसा कर बैठी। मुझे तो पहले ही समझ जाना चाहिए था।

गंगा : कैसी नादानी और क्या समझने की बात कर रही हो विमला भाभी?

विमला : तुम डॉक्टर बाई की चमची हो। तुम्हीं ने भड़का दिया है डॉक्टर को, पर मेरा नाम भी विमला है। मुझे कानून पढ़ाने चली है, मैं पता करके ही रहूँगी।

गंगा : भगवान् के लिए बस भी करो विमला भाभी। जल्दबाजी में

कोई ऐसा काम मत करना, जिससे जनम भर पछतावा हो।

विमला : लो, अब तुम भी भाषण देने लगीं। माफ कर मेरी माँ, माफ कर।

गंगा : ठीक है, तो मैं जा रही हूँ, पर ध्यान रखना। (बहू की तरफ देखकर) माताराणी सब ठीक करेगी, तुम चिंता मत करो।

(गंगा चली जाती है। विमला व अनिता घर आती हैं। अनिता विमला से कहती है।)

अनिता : माँ जी, आप चिंता मत करो।

विमला : कैसे चिंता न करूँ। मुझे मेरे वंश का वारिस चाहिए। क्या तू नहीं चाहती?

अनिता : माँजी, मैं भी चाहती हूँ एक सुंदर सा पोता दूँ आपके परिवार को। भगवान् पर भरोसा रखो, पोता ही होगा।

विमला : नहीं, मैं तो पता करना चाहती हूँ कि तू लड़का जनेगी या लड़की।

अनिता : (डरते-डरते) माँजी, अगर लड़की हुई तो!

विमला : (गुस्से में) नाम मत ले लड़की का। सपने में भी मत सोचना लड़की का। वरना गजब हो जाएगा। जा, तू आराम कर।

(शाम को विमला का बेटा दिनेश घर आता है। विमला और दिनेश दोनों बातें करते हैं।)

विमला : आ गए बेटा।

दिनेश : हाँ माँ। क्या हुआ, अस्पताल होकर आ गए?

विमला : होना क्या था? डॉक्टर ने कहा थोड़ी कमजोरी है। ख्याल रखना पड़ेगा।

दिनेश : चलो, चिंता की कोई बात नहीं है। हम सब मिलकर अच्छे से अनिता का ध्यान रखेंगे। अब तो तुम खुश हो, माँ।

विमला : अरे बेटा! कैसी खुशी? मेरे मन में तो अभी भी शंका है।

दिनेश : क्यों माँ, अब कैसी शंका?

विमला : बेटा, डॉक्टर ने यह तो नहीं बताया कि गर्भ में लड़का है या लड़की।

दिनेश : बस, इतनी सी बात? नहीं बताया तो नहीं। हमारे लिए तो लड़का-लड़की बराबर है।

विमला : ऐसे कैसे बराबर? लड़का तो कुलदीपक होता है।

दिनेश : माँ, तुम भी कौन से जमाने की बात करती हो?

विमला : मैं कुछ नहीं जानती बेटा। तुम कल सुबह जाकर एक बार फिर बहू की जाँच करवाओ।

दिनेश : ठीक है माँ, मैं कल ही अनिता की सोनोग्राफी करवा लूँगा। अब तो खुश?

(अगले दिन सुबह दिनेश अनिता को लेकर एक डॉक्टर के पास सोनोग्राफी करवाने जाता है। सोनोग्राफी करनेवाला

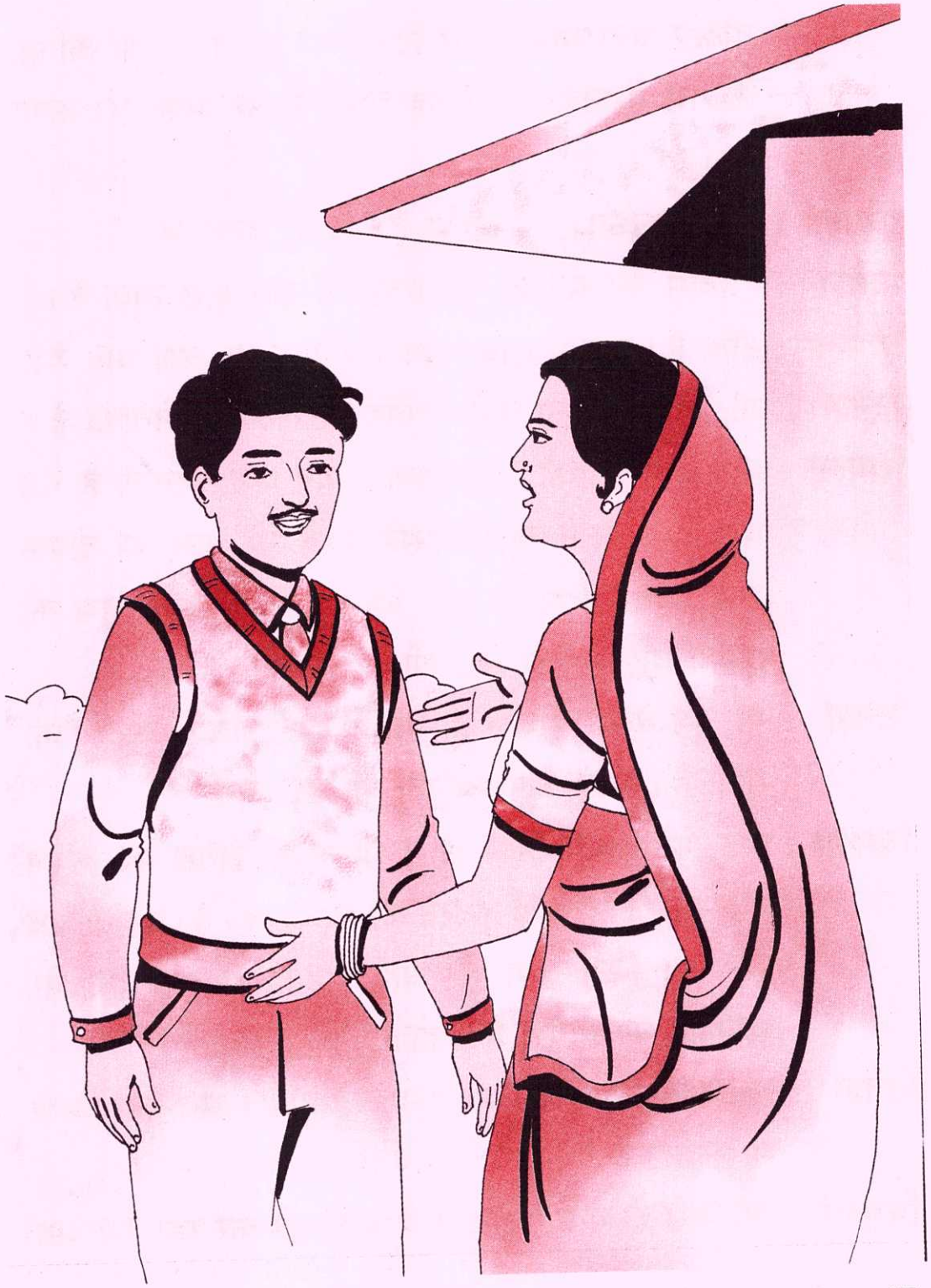

डॉक्टर बड़ी मुश्किल से दिनेश को बताता है कि अनिता के गर्भ में लड़की है। वह रिपोर्ट लेकर अपने घर आता है।)

विमला : आ गया बेटा। क्या खबर है? बता, जल्दी बता।

दिनेश : (उदास मन से) हाँ माँ, रिपोर्ट में सब कुछ ठीक है।

विमला : ठीक है! क्या मतलब? साफ-साफ बता, क्या बात है?

दिनेश : माँ, तुम चिंता ना करो। हमारे घर लक्ष्मी आनेवाली है।

विमला : क्या कहा लड़की? हे भगवान्! यह क्या? लगता है मेरा वंश नहीं चलने वाला। इसके रहते मेरे कुल का दीपक शायद ही पैदा हो। न जाने किस घड़ी में इस मनहूस को अपनी बहू बनाकर लाई थी?

दिनेश : माँ, तुम बेकार परेशान हो रही हो। यह सब तो कुदरत की माया है। इसमें भला अनिता का क्या दोष?

विमला : वाह, बेटा वाह! आज तो तू भी अपनी लुगाई की जबान बोलने लगा। ये कोई कुदरत की मरजी नहीं है। यह तो सब इसी का किया-धरा है। यह चाहती ही नहीं कि मेरे खानदान का वारिस पैदा हो।

दिनेश : माँ! शांत हो जाओ। जो हुआ, सो हुआ। अब क्या किया जा सकता है?

विमला : ऐसे कैसे हो गया? और तू ये क्या बातें कर रहा है? अब

भी कुछ नहीं बिगड़ा?

दिनेश : क्या मतलब माँ? तुम क्या कहना चाहती हो?

विमला : बेटा, अब कहना क्या और सुनना क्या? छोटी सी बात है। मुसीबत से छुटकारा तो पाना पड़ेगा।

दिनेश : मुसीबत—कैसी बातें करती हो? औलाद भी भला कभी मुसीबत हो सकती है? उससे छुटकारा? यह तो पाप है माँ।

विमला : तो बेटा, तब तू मुझे बताएगा क्या पाप है, क्या पुण्य? एक बात कान खोलकर सुन ले। जितना जल्दी हो सके, तुम सफाई करवा दो। इसी में सबकी भलाई है।

(वह उठकर अनिता के पास जाता है।)

अनिता : सुनो जी, मैंने आपकी और माँजी की बातें सुन ली हैं। आप कुछ कहते क्यों नहीं?

दिनेश : तुम ठीक कहती हो अनिता। मैं तुम्हारी पीड़ा समझता हूँ। पर माँ को कौन समझाए? वह तो अपने कुलदीपक का मुँह देखने को ही जी रही हैं।

अनिता : तुम जरा सोचो। यह हमारी पहली संतान है। वह भी शादी के पाँच वर्ष बाद। क्या कोई बाप अपनी संतान को इस तरह मार सकता है? क्या मुँह लेकर जाओगे डॉक्टर के पास। क्या कहोगे डॉक्टर से?

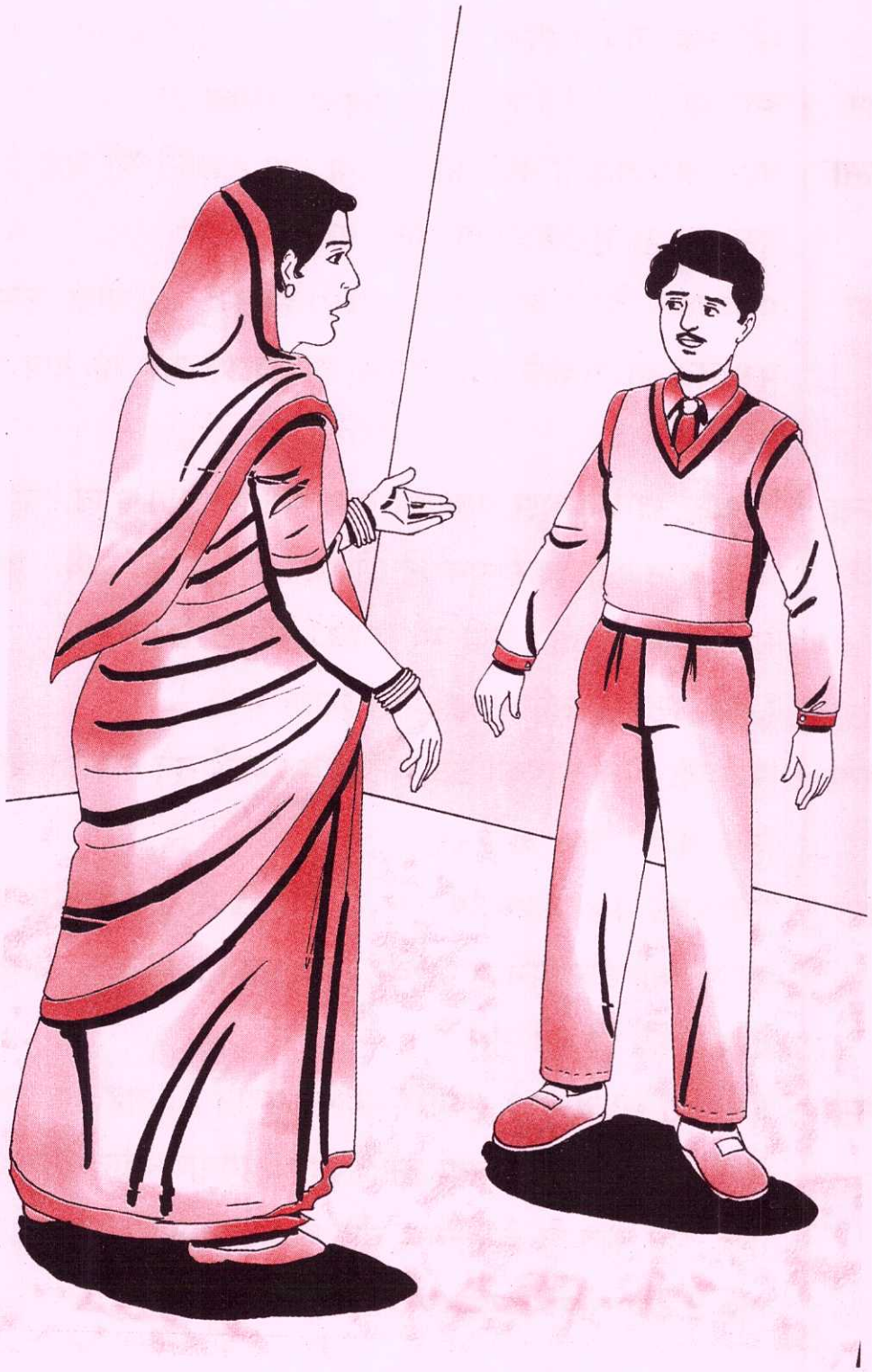

दिनेश : अनिता, माँ की जिद के आगे किसी की नहीं चलती। कुछ तो करना पड़ेगा। रात बहुत हो गई है। चलो, सो जाओ। कल सुबह बात करेंगे।

(दोनों सो जाते हैं। दूसरे कमरे में विमला सोई है। अचानक उसे लगता है जैसे कोई उसे पुकार रहा है। दादी माँ··· ! ओ दादी माँ··· ! विमला चौंक जाती है। सोचती है। कहीं सपना तो नहीं देख रही। लगता है, कान बज रहे हैं। सोने का प्रयास करती है···फिर वही मासूम सी आवाज—दादी माँ··· ! ओ दादी माँ··· !)

विमला : (चौंककर) कौन दादी माँ? किसकी दादी माँ?

आवाज : आप! आप! मेरी दादी माँ।

विमला : नहीं! नहीं! मैं किसी की दादी माँ कैसे हो सकती हूँ?

आवाज : हाँ, सही कहा। आप मेरी दादी माँ कैसे हो सकती हैं?

विमला : बकवास बंद करो। कौन हो तुम? सामने आओ।

आवाज : नहीं, सामने नहीं आ सकती। डर लगता है।

विमला : क्या कहा, डरती हो? किससे डरती हो। अपनी दादी माँ से। भला दादी माँ से कोई डरता है।

आवाज : दादी माँ से तो नहीं डरती हूँ। डरती हूँ उसके डरावने रूप से। जो मुझे इस संसार में नहीं आने देना चाहता।

विमला : (गुस्से में) तुम्हारी इतनी हिम्मत! अच्छा, तो तुम हो। अब

समझ में आया। मेरे वंश को बरबाद करने वाली। तुम्हें मैं दुनिया में आने दूँ, यह नहीं हो सकता।

आवाज : हाँ, दादी माँ। ठीक पहचाना। मैं तुम्हारी अजन्मी पोती।

विमला : तो यहाँ मेरे पास क्या लेने आई हो?

आवाज : कुछ लेने नहीं। मैं तो देखने आई हूँ। सुना था, दादी माँ की गोद में स्वर्ग होता है। उसकी कहानियों में परियाँ होती हैं। राजकुमार होते हैं, पर यहाँ तो ऐसा कुछ भी नहीं है।

विमला : तुम्हें किसने कह दिया यह सब? झूठ है यह सब। होता है यह सब, पर केवल पोतों के लिए जो दादी माँ के वंश को चलाते हैं। चली जाओ।

आवाज : दादी माँ, चली जाऊँगी। आपने तो मेरे जाने का पूरा इंतजाम कर दिया है। पर आपने ऐसा क्यों किया? दादी माँ, एक बात बताओगी।

विमला : क्या बात है? पूछो।

आवाज : दादी माँ,

"जब मैं माँ की कोख में आई,
बजी बधाई, बँटी मिठाई,
फिर क्यों तेरे मन में आई,
बिना ब्याह मेरी करी विदाई।"

विमला : यह सब मैं नहीं जानती। मैं मजबूर हूँ।

आवाज : दादी माँ, ऐसी भी क्या मजबूरी है, तो आप मेरी इस तरह विदाई करवा रही हो। एक बात बताओ, दादी माँ! यदि सीता, सावित्री, मीरा बाई, इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा, कल्पना चावला, लता मंगेशकर, पी.टी. ऊषा, किरण बेदी··· न जाने कितने नाम गिनाऊँ। यदि उन सबकी दादी माँएँ आपकी तरह कठोर हो जातीं तो क्या ये दुनिया उनको जान पाती? कभी नहीं। ज्यादा दूर की क्यों सोचें, यदि आपकी दादी भी आपकी तरह कठोर हो जातीं तो क्या आप यहाँ होतीं? बोलो दादी माँ! चुप क्यों हो?

विमला : (अपने दोनों कान बंद कर, जोर से चिल्लाकर) बस करो बेटी, बस करो। अपनी दादी माँ पर दया करो। अब और ताने मत सुनाओ। आज तुम्हारी पुकार ने मेरी आँखें खोल दीं। बेटी, मैं वादा करती हूँ कि तुम जनम लोगी और जरूर लोगी। अब तुम्हें इस दुनिया में आने से कोई नहीं रोक सकता। मेरी गोदी में खेलने से कोई नहीं रोक सकता। आओ बेटी, आओ···!

हम सब तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।

□□□

आमुख

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली ने नवसाक्षरों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों और अपेक्षाओं के अनुरूप साक्षरता-साहित्य के निर्माण में नवाचार की पहल की है। हिंदीभाषी क्षेत्रों के नवसाक्षरों की पहचान की रोशनी में प्रौढ़ साक्षरता में लेखनरत साहित्यकारों, समाजार्थिक-चिंतकों, प्रौढ़ शिक्षा विशेषज्ञों तथा सतत शिक्षा केंद्रों के अनुभवी आयोजकों ने 23-24 अगस्त, 2007 की अवधि में भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ में आयोजित विचार गोष्ठी में नवसाक्षरों के लिए उपयोगी साहित्य-लेखन पर गहन विचार-विमर्श किया।

साक्षरता-सामग्री के पाठ्य विवरण पर संगोष्ठी में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों में सहमति हुई। साक्षरता सामग्री के तीन प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए। पहला उद्देश्य, जो नवसाक्षरों की साक्षरता को सजीव बनाने और आगे बढ़ाने में सहायक हो; दूसरा उद्देश्य, जो जन-कल्याण और सामूहिक कार्य-संस्कृति को बढ़ावा देनेवाला हो, ताकि सब लोग मिल-जुलकर रहते हुए विकास की ओर बढ़ें। तीसरा उद्देश्य, जो अपने अधिकारों और कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हित के लिए उन्हें प्रेरणा दे सके, जिससे उनका कल्याण, समाज का हित और राष्ट्र का विकास होता रहे।

इस प्रौढ़ साक्षरता साहित्य कार्यशाला में श्री सतीश आचार्य द्वारा लिखित पुस्तक '**पुकार**' नवसाक्षरों को जागरूक पाठक बनाने और विकास के क्षेत्र में उन्हें आगे बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। इसका संप्रेषण और भाषा स्तर भी प्रौढ़ नवसाक्षरों में जाँच लिया गया है। इस पुस्तक का विधिवत् क्षेत्र-परीक्षण करा लिया गया है। इस पुस्तक में नवसाक्षरों के सामाजिक सरोकारों को प्राथमिकता दी गई है। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में अवश्य सफल होगी।

इसे प्रकाशित करने में और इसे नवसाक्षरों तक पहुँचाने में प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ने जो सहयोग प्रदान किया है, हम उसके लिए हृदय से आभारी हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि प्रभात प्रकाशन ने इस शृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन एवं वितरण का दायित्व स्वीकार किया है। इस पुस्तक के पाठकों से हमें जो सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनका स्वागत करेंगे।

17-बी, इंद्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002

—डॉ. मदन सिंह
महासचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली™
ISO 9001 : 2000 प्रकाशक